Ashkon Ki Barsaat (Hindi)

अश्कों की बरसात

(सीरते इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ عنہ के चन्द गोशे)

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

مکتبۃ المدینہ®
(دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

अश्कों की बरसात[1]

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (36 सफ़हात) आखि़र तक पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ईमान ताज़ा हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تعالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : जब किसी **मस्जिद** के पास से गुज़रो तो **रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ो। (فَضْلُ الصَّلَاةِ عَلَى النَّبِيّ لِلقاضی الجَهْضَمی ص ٧٠ رقم ٨٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पुर रौनक़ बाज़ार में रेशम के कपड़े की एक दुकान पर उस दुकान का ख़ादिम मश्ग़ूले दुआ है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से **जन्नत** का सुवाल कर रहा है। येह सुन कर मालिके दुकान पर रिक़्क़त त़ारी हो गई, आंखों से आंसू जारी हो गए ह़त्ता कि कन्पटियां और कन्धे कांपने लगे। मालिके दुकान ने फ़ौरन दुकान बन्द करने का हुक्म दिया, अपने सर पर कपड़ा लपेट कर जल्दी से उठे और कहने लगे : अफ़्सोस ! हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर किस क़दर जरी (या'नी निडर) हो गए कि हम में से एक शख़्स

---

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के अन्दर हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (3 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सि. 1431 हि. / 15-7-10) में फ़रमाया था। तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है। **मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

www.dawateislami.net

सिर्फ़ अपने दिल की मरज़ी से **अल्लाह** عزوجل से **जन्नत** मांगता है। (येह तो बहुत हिम्मत भरा सुवाल है) हम जैसे (गुनहगारों) को तो **अल्लाह** عزوجل से (अपने गुनाहों की) **मुआफ़ी** मांगनी चाहिये । येह मालिके दुकान बहुत ज़ियादा **ख़ौफ़े ख़ुदा** عزوجل के ह़ामिल थे, रात जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो इन की आंखों से इस क़दर **अश्कों की बरसात** होती कि चटाई पर आंसू गिरने की टपटप साफ़ सुनाई देती। और इतना रोते इतना रोते की पड़ोसियों को रह़्म आने लगता।

(مُلَخَّص از اَلْخَيْراتُ الْحِسان لِلْهَيْتَمِي ص ٥٠، ٥٤ دارالكتب العلمية بيروت)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप जानते हैं येह कौन थे ? येह मालिके दुकान करोड़ों ह़-नफ़िय्यों के अ़ज़ीम पेशवा, **सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह, इमामे आ'ज़म, फ़क़ीहे अफ़ख़म** ह़ज़रते सय्यिदुना **इमामे अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित** رضی اللہ تعالیٰ عنہ थे।

न क्यूं करें नाज़ अहले सुन्नत, कि तुम से चमका नसीबे उम्मत
सिराजे उम्मत मिला जो तुम सा, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

चारों इमाम बरह़क़ हैं

सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा का नामे नामी नो'मान, वालिदे गिरामी का नाम साबित और **कुन्यत अबू ह़नीफ़ा** है । आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ सि. 70 हि. में इ़राक़ के मशहूर शहर "कूफ़े" में पैदा हुए और 80 साल की उ़म्र में 2 **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** सि. 150 हि. में वफ़ात पाई। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 1, स. 169, 219) और आज भी बग़दाद शरीफ़ में आप का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार मर-जए ख़लाइक़ है।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (त-बरानी)

अइम्मए अर-बआ या'नी चारों इमाम (इमामे अबू ह़नीफ़ा, इमामे शाफ़ेई, इमामे मालिक और इमामे अह़मद बिन ह़म्बल رضی اللہ تعالٰی عنھم) बरह़क़ हैं और इन चारों के ख़ुश अ़क़ीदा मुक़ल्लिदीन आपस में भाई भाई हैं, इन में आपस में **तअ़स्सुब** (या'नी हटधर्मी) की कोई वजह नहीं। सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ चारों इमामों में बुलन्द मर्तबा हैं, इस की एक वजह येह भी है कि इन चारों में सिर्फ़ आप **ताबेई** हैं। "**ताबेई**" उस को कहते हैं : "जिस ने ईमान की ह़ालत में किसी सह़ाबी رضی اللہ تعالٰی عنہ से मुलाक़ात की हो और ईमान पर उस का ख़ातिमा हुवा हो।" (اَلْخَیْرَاتُ الْحِسان ص ۳۳) सय्यिदुना इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم ने मुख़्तलिफ़ रिवायात के तह़्त चन्द सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल किया है और बा'ज़ सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से बराहे रास्त सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इर्शादात भी सुने हैं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **वासिला बिन अस्क़अ़** رضی اللہ تعالٰی عنہ से सुन कर इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने येह रिवायत बयान फ़रमाई है कि **अल्लाह** के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : अपने भाई की **शुमातत** न कर (या'नी उस की मुसीबत पर इज़्हारे मुसर्रत न कर) कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर रह़्म करेगा और तुझे उस में मुब्तला कर देगा।

(सु-नने तिरमिज़ी, जि. 4, स. 227, ह़दीस : 2514)

है नाम नो'मान इब्ने साबित, अबू ह़नीफ़ा है उन की कुन्यत
पुकारता है येह कह के आ़लम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (कन्ज़ुल उम्माल)

ह़-नफ़िय्यों के लिये मग़्फ़िरत की बिशारत

सय्यिदुना इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم ने अपनी ज़िन्दगी में **पचपन (55) ह़ज** किये । जब आख़िरी बार ह़ज की सआ़दत ह़ासिल की तो ख़ुद्दामे का'बए मुशर्रफ़ा ने आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ की ख़्वाहिश पर **बाबुल का'बा** खोल दिया, आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ बसद इ़ज्ज़ो नियाज़ अन्दर दाख़िल हुए और बैतुल्लाह के दो सुतूनों के दरमियान खड़े हो कर दो[2] रक्अ़त में पूरा क़ुरआने पाक **ख़त्म** किया, फिर देर तक रो रो कर मुनाजात करते रहे, आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ मश्ग़ूले दुआ़ थे कि **बैतुल्लाह** के एक गोशे (या'नी कोने) से आवाज़ आई : **"तुम ने अच्छी त़रह़ हमारी मा'रिफ़त** (या'नी पहचान) **ह़ासिल की और ख़ुलूस के साथ ख़िदमत की, हम ने तुम को बख़्शा और क़ियामत तक जो तुम्हारे मज़हब पर होगा** (या'नी तुम्हारी तक़्लीद करेगा) **उस को भी बख़्श दिया ।"** (दुर्रे मुख़्तार, जि. 1, स. 126, 127) اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम किस क़दर ख़ुश नसीब हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہ का दामने करम हमारे हाथों में आया ।

मरूं शहा ! ज़ेरे सब्ज़ गुम्बद, हो मेरा मदफ़न बक़ीए ग़रक़द
करम हो बहरे रसूले अकरम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلی اللہ تعالیٰ علیٰ محمد

रौज़ए शाहे अनाम से जवाबे सलाम

हमारे इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم पर शहन्शाहे उमम صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم का बेहद लुत़्फ़ो करम था । **मदीनए मुनव्वरह** زادھا اللہ شرفا وتعظیما में जब

आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने सरकारे नामदार صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم के रौज़ए पुर अन्वार पर इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ किया : اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدَ الْمُرْسَلِیْن तो रौज़ए अन्वर से जवाब की आवाज़ आई : وَعَلَیْکَ السَّلَامُ یَا اِمَامَ الْمُسْلِمِیْن

(तज़्किरतुल औलिया, स. 186, इन्तिशाराते गन्जीना तहरान)

तुम्हारे दरबार का गदा हूं, मैं साइले इश्क़े मुस्त़फ़ा हूं
करो करम बहरे ग़ौसे आ'ज़म, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ताजदारे रिसालत की बिशारत

सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने जब तह़सीले इ़ल्म से फ़राग़त ह़ासिल कर ली तो गोशा नशीनी की निय्यत फ़रमाई। एक रात जनाबे रिसालत मआब صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم की ख़्वाब में ज़ियारत हुई। मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : **"ऐ अबू ह़नीफ़ा ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने आप को मेरी सुन्नत ज़िन्दा करने के लिये पैदा फ़रमाया है, आप गोशा नशीनी का हरगिज़ क़स्द** (या'नी इरादा) **न करें।"** (तज़्किरतुल औलिया, स. 186)

अ़ता हो ख़ौफ़े ख़ुदा ख़ुदारा, दो उल्फ़ते मुस्त़फ़ा ख़ुदारा
करूं अ़मल सुन्नतों पे हर दम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दिन रात के मा'मूलात

जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर सय्यिदुना इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم की हौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई और **सुन्नतों** की ख़िदमत का हुक्म दिया जिस के नतीजे में हमारे इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم का **सुन्नतों** की ख़िदमत की मसरूफ़िय्यत और ज़ौक़े इबादत मुला-हज़ा हो। चुनान्चे हज़रते **मिस्अर बिन किदाम** علیہ رحمۃ اللہ السلام फ़रमाते हैं : "मैं **इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा** رضی اللہ تعالیٰ عنہ की मस्जिद में हाज़िर हुवा, देखा कि नमाज़े **फ़ज्र** अदा करने के बा'द आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ लोगों को सारा दिन **इल्मे दीन** पढ़ाते रहते, इस दौरान सिर्फ़ नमाज़ों के वक़्फ़े हुए। बा'द नमाज़े इशा आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ अपनी दौलत सरा (या'नी मकाने आलीशान) पर तशरीफ़ ले गए। थोड़ी ही देर के बा'द सादा लिबास में मल्बूस ख़ूब इत्र लगा कर फ़ज़ाएं महकाते, अपना नूरानी चेहरा चमकाते हुए फिर मस्जिद के कोने में नवाफ़िल में मश्ग़ूल हो गए यहां तक कि सुब्हे सादिक़ हो गई, अब दरे दौलत (या'नी मकाने आलीशान) पर तशरीफ़ ले गए और लिबास तब्दील कर के वापस आए और नमाज़े फ़ज्र बा जमाअत अदा करने के बा'द गुज़श्ता कल की तरह इशा तक सिल्सिलए दर्सो तदरीस जारी रहा। मैं ने सोचा आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ बहुत थक गए होंगे, आज रात तो ज़रूर आराम फ़रमाएंगे, मगर दूसरी रात भी वोही मा'मूल रहा। फिर तीसरा दिन और रात भी इसी तरह गुज़रा। मैं बेहद मु-तअस्सिर हुवा और मैं ने फ़ैसला कर लिया कि उम्र भर इन की ख़िदमत में रहूंगा। चुनान्चे मैं ने उन की

www.dawateislami.net

मस्जिद ही में मुस्तक़िल क़ियाम इख़्तियार कर लिया। **मैं ने अपनी मुद्दते क़ियाम में, इमामे आ'ज़म علیه رحمة الله الاكرم को दिन में कभी बे रोज़ा और रात को कभी इबादत व नवाफ़िल से ग़ाफ़िल नहीं देखा।** अलबत्ता ज़ोहर से क़ब्ल आप رضی الله تعالیٰ عنه थोड़ा सा आराम फ़रमा लिया करते थे। (اَلْمَناقِب لِلْمُوَفَّق ج ١ ص ٢٣٠ تا ٢٣١ كوئٹه) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मुआ़ज़ رحمة الله تعالىٰ عليه की रिवायत है, **मिस्अ़र बिन किदाम** عليه رحمة الله السلام बेहद ख़ुश नसीब थे कि उन की वफ़ात **इमामे आ'ज़म** علیه رحمة الله الاكرم की मस्जिद में **सज्दे** की ह़ालत में हुई। (ऐज़न, स. 231)

अल्लाह عزوجل ***की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

امين بجاه النبي الامين صلى الله تعالى عليه واله وسلم

जो बे मिसाल आप का है तक़्वा, तो बे मिसाल आप का है फ़तवा
हैं इल्मो तक़्वा के आप संगम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीस साल मुसल्सल रोज़े

"**अल ख़ैरातुल ह़िसान**" में है, आप ने मुसल्सल **तीस साल रोज़े रखे,** तीस साल तक एक रक्अ़त में क़ुरआने पाक **ख़त्म** करते रहे, चालीस (बल्कि 45) साल तक इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ अदा की, **जिस मक़ाम पर आप की वफ़ात हुई उस मक़ाम पर आप ने सात हज़ार बार क़ुरआने पाक ख़त्म किये।** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رحمة الله تعالىٰ عليه के सामने इमामे आ'ज़म علیه رحمة الله الاكرم पर किसी ने ए'तिराज़ किया तो आप رضی الله تعالیٰ عنه ने फ़रमाया : "क्या तुम

ऐसे शख़्स पर ए'तिराज़ करते हो जिस ने पेंतालीस साल तक पांचों नमाज़ें एक ही वुज़ू से अदा कीं और वोह एक **रक्अ़त** में पूरा क़ुरआने करीम **ख़त्म** कर लेते थे और मेरे पास जो कुछ फ़िक़्ह है वोह उन्हीं से सीखा है।" रिवायत में है : शुरूअ़ में आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ सारी रात इ़बादत नहीं करते थे। आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने एक बार किसी को येह कहते हुए सुन लिया कि "अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہ सारी रात सोते नहीं हैं।" चुनान्चे उस के हुस्ने ज़न की लाज रखते हुए आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने तमाम रात इ़बादत शुरूअ़ कर दी। (अल ख़ैरातुल ह़िसान, स. 50)

तेरी सख़ावत की धूम मची है, मुराद मुंह मांगी मिल रही है
अ़ता हो मुझ को मदीने का ग़म, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

www.dawateislami.net

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

माहे र-मज़ान में 62 ख़त्मे क़ुरआन

इमाम अबू यूसुफ़ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ फ़रमाते हैं : इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم र-मज़ानुल मुबारक में मअ़ ई़दुल फ़ित्र 62 क़ुरआने पाक **ख़त्म** करते, (दिन को एक, रात को एक, तरावीह़ के अन्दर सारे माह में एक और ई़द के रोज़ एक) और माल में सख़ावत करने वाले थे, इ़ल्म सिखाने में साबिर (या'नी सब्र करने वाले) थे, अपने ह़क़ में किये जाने वाले ए'तिराज़ात को सुनते थे, **ग़ुस्से** से कोसों दूर थे। (अल ख़ैरातुल ह़िसान, स. 50)

अ़ता हो ख़ौफ़े ख़ुदा ख़ुदारा, दो उल्फ़ते मुस्त़फ़ा ख़ुदारा
करूं अ़मल सुन्नतों पे हर दम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

कभी नंगे सर न देखा

"**तज़्किरतुल औलिया**" में है, सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم की ख़िदमत में बीस साल ह़ाज़िर रहा । ख़ल्वत हो या जल्वत (या'नी लोगों के दरमियान हों या अकेले), कभी आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को नंगे सर न देखा, न कभी पाउं फैलाए देखा । एक बार अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! तन्हाई में तो पाउं फैला लिया करें । फ़रमाया : "मज्मअ़ में तो लोगों का एह़तिराम करूं और तन्हाई में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एह़तिराम न करूं, येह मुझ से नहीं हो सकता ।" (तज़्किरतुल औलिया, 188)

उस्ताद के मकान की त़रफ़ पाउं न फैलाते

"**अल ख़ैरातुल ह़िसान**" में है आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ज़िन्दगी भर अपने उस्ताज़े मोह़तरम सय्यिदुना इमाम ह़म्माद علیہ رحمۃ اللہ الجواد के मकाने अ़-ज़मत निशान की त़रफ़ पाउं फैला कर नहीं लैटे ह़ालां कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के मकाने आ़लीशान और उस्ताज़े मोह़तरम علیہ رحمۃ اللہ الاکرم के मकाने अ़ज़ीमुश्शान के दरमियान तक़्रीबन सात गलियां पड़ती थीं !

(अल ख़ैरातुल ह़िसान, स. 82)

उस्ताद की चौखट पर सर रख कर सो जाते

سُبحٰنَ الله ! हमारे इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم अपने उस्ताद का किस क़दर एह़तिराम फ़रमाते थे, जभी तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ इल्मे दीन की दौलत से निहाल व मालामाल थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہ تعالٰی عَنہُما का भी अपने उस्ताज़े मोह़तरम के साथ एह़तिराम मिसाली था चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुखर्रजा)"** सफ़ह़ा 143 ता 144 पर मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیہ رَحمۃُ الرَّحمٰن का **इर्शाद** है : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہ تعالٰی عَنہُما फ़रमाते हैं : जब मैं ब ग़-रज़े **तह़सीले इल्म** (या'नी इल्मे दीन सीखने के लिये) ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللہ تعالٰی عَنہُما के दरे दौलत पर जाता और वोह बाहर तशरीफ़ न रखते होते तो बराहे अदब उन (या'नी अपने उस्ताज़े मोह़तरम) को **आवाज़** न देता, उन की चौखट पर **सर** रख कर लैटा रहता। हवा ख़ाक और रैता उड़ा कर मुझ पर डालती, फिर जब (अपने त़ौर पर उस्ताज़े गिरामी) ह़ज़रते ज़ैद (رضی اللہ تعالٰی عنہ) काशानए अक़्दस से तशरीफ़ लाते (तो) फ़रमाते : "इब्ने **अ़म्मे रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ! (या'नी ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के चचा के बेटे) आप ने मुझे **इत्तिलाअ़** क्यूं न करा दी ?" मैं अ़र्ज़ करता : "मुझे लाइक़ न था कि मैं आप को इत्तिलाअ़ कराता।" (مِراۃُ الجِنان للیافعی ج۱ ص۹۹ بِتَصَرُّف دارالکتب العلمیۃ بیروت)

आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने येह फ़रमाने के बा'द फ़रमाया :

येह अदब है जिस की ता'लीम कुरआने अज़ीम ने फ़रमाई :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا یَعْقِلُوْنَ ﴿۴﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَیْهِمْ لَكَانَ خَیْرًا لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۵﴾ (پ۲۶، الحجرات)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं उन में अक्सर बे अक़्ल हैं। और अगर वोह सब्र करते यहां तक कि तुम आप उन के पास तशरीफ़ लाते तो येह उन के लिये बेहतर था और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

क्या मुरतद उस्ताद की भी ता'ज़ीम करनी होगी ?

दीनी उस्ताद के एह़तिराम के बारे में जो बयान किया गया वोह सिर्फ़ सहीहुल अक़ीदा मुसल्मान ग़ैरे फ़ासिक़ उस्ताज़ के लिये है अगर مَعَاذَ الله उस्ताद ग़ैर मुस्लिम या मुरतद है तो उस का कोई एह़तिराम नहीं बल्कि ऐसों से पढ़ना, उन की सोह़बत में रहना ख़ुद अपने ईमान के लिये ख़तरनाक है। मुरतद उस्ताद के शागिर्द पर ह़क़ के बारे में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमते बा ब-र-कत में **सुवाल** हुवा तो फ़रमाया : इस क़िस्म के उस्ताज़ का शागिर्द पर वोही ह़क़ है जो (फ़िरिश्तों के साबिक़ा उस्ताद) शैत़ाने लईन का फ़िरिश्तों पर है कि फ़िरिश्ते उस पर ला'नत भेजते हैं और क़ियामत के दिन (अपने उस्ताद को) घसीट घसीट कर दोज़ख़ में फेंक देंगे। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 707) बहर ह़ाल बयान कर्दा "**दोनों**[2] **ह़िकायतों** से" बिल ख़ुसूस वोह त़-लबा दर्स ह़ासिल करें जो अपने मुसल्मान दीनी असातिज़ा का एह़तिराम करने के बजाए उन की तौहीन करते और पीछे से उन का मज़ाक़ उड़ाते फिरते हैं,

www.dawateislami.net

ऐसे त़-लबा को इ़ल्मे दीन की अस्ल रूह़ क्यूंकर ह़ासिल हो सकती है ! मौलाए रूम علیہ رحمۃ القوم फ़रमाते हैं :

از خدا جوئیم توفیقِ ادب　　بے ادب محروم ماند از فضلِ رب
بے ادب تنہا نہ خود را داشت بد　　بلکہ آتش در ہمہ آفاق زد

(हम अल्लाह तआ़ला से हुसूले अदब की तौफ़ीक़ मांगते हैं क्यूं कि बे अदब रब तआ़ला के फ़ज़्ल से मह़रूम रहता है। बे अदब न सिर्फ़ अपने आप को बुरे ह़ालात में रखता है बल्कि उस की बे अ-दबी की आग तमाम दुन्या को अपनी लपेट में ले लेती है)　　(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 709)

"उस्ताज़ तो रूह़ानी बाप होता है" के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से असातिज़ा की ग़ीबतों की 22 मिसालें

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 505 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**ग़ीबत की तबाह कारियां**" सफ़ह़ा 419 और सफ़ह़ए बा'दिया पर है : इ़ल्मे दीन पढ़ाने वाला उस्ताज़ इन्तिहाई क़ाबिले एह़तिराम होता है मगर बा'ज़ नादान त़-लबा अपने असातिज़ा के नाम बिगाड़ते, मज़ाक़ उड़ाते हुए नक़्लें उतारते, तोह्मतें लगाते, बद गुमानियां और ग़ीबतें करते हैं, उन की इस्लाह़ की ख़ातिर असातिज़ा की ग़ीबतों की 22 मिसालें ह़ाज़िर की हैं : ۞ आज उस्ताज़ साह़िब का मूड ऑफ़ है लगता है घर से लड़ कर आए हैं ۞ येह फ़ुलां मद्रसे में पढ़ाते थे ۞ वहां तन-ख़्वाह कम थी, ज़ियादा तन-ख़्वाह के लिये हमारे मद्रसे में तशरीफ़ लाए हैं। ۞ तौबा ! तौबा ! हमारे उस्ताज़ (या क़ारी साह़िब) बालिग़ात (या'नी बड़ी लड़कियों) को ट्यूशन पढ़ाने

उन के घर जाते हैं ۞ उस्ताज़ साहिब पढ़ाने में मुझ ग़रीब पर कम मगर फ़ुलां मालदार के लड़के पर ज़ियादा तवज्जोह देते हैं ۞ हमारे उस्ताज़ साहिब जब देखो मुझे ज़लील करते रहते हैं ۞ त़-लबा पर बिला वजह सख़्ती करते हैं ۞ पढ़ाना आता नहीं, उस्ताज़ बन बैठे हैं ! ۞ देखा ! आज उस्ताज़ साहिब मेरे सुवाल पर कैसे फंसे ! ۞ उस्ताज़ साहिब को किताब के ह़ाशिये से मु-तअ़ल्लिक़ कोई सुवाल पूछ लो तो आएं बाएं शाएं करने लगते हैं ۞ उस्ताज़ साहिब ने इस सुवाल का जवाब ग़लत़ दिया है, आओ मैं तुम्हें किताब दिखाता हूं ۞ उस्ताज़ साहिब को ख़ुद इ़बारत पढ़नी नहीं आती इस लिये हम से पढ़वाते हैं ۞ उस्ताज़ साहिब को तो ढंग से तरजमा करना भी नहीं आता ۞ उस्ताज़ साहिब सबक़ को ख़्वाह म ख़्वाह (ख़ाह-मख़ाह) लम्बा कर देते हैं ۞ फ़ुलां उस्ताज़ से तो मैं मजबूरन पढ़ रहा हूं, मेरा बस चले तो उन से पीर्यड (या सबक़) ले कर किसी और को दे दूं या उन्हें मद्रसे ही से निकाल दूं ۞ फ़ुलां उस्ताज़ तो "बाबाए उर्दू शुरूह़ात" हैं, उर्दू शर्ह़ से तय्यारी कर के आते हैं, जब तक उर्दू शर्ह़ न पढ़ लें सबक़ नहीं पढ़ा सकते ۞ आज उस्ताज़ साहिब सबक़ तय्यार कर के नहीं आए थे इसी लिये इधर उधर की बातों में वक़्त गुज़ार दिया ۞ जब येह ज़ेरे ता'लीम थे तो पढ़ाई में इतने कमज़ोर थे कि रोज़ाना अपने उस्ताज़ से डांट खाते थे ۞ मैं ह़ैरान हूं कि फ़ुलां त़ालिबे इ़ल्म की पोज़ीशन कैसे आ गई ! ज़रूर उस्ताज़ साहिब ने उस को परचे के सुवालात बताए होंगे ۞ फ़ुलां उस्ताज़ (या क़ारी साहिब) का ज़ेह्न म-दनी नहीं है, उन्हों ने कभी द-रजे में म-दनी कामों के बारे में एक

www.dawateislami.net

लफ़्ज़ नहीं बोला ۞ फुलां फुलां उस्ताज़ की आपस में बनती नहीं जब देखो एक दूसरे के ख़िलाफ़ बातें करते रहते हैं ۞ हमारे उस्ताज़ (या क़ारी साहिब) आज कल फुलां अमरद में बड़ी दिल चस्पी ले रहे हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلى الله تعالى على محمد

दीवार की कीचड़

हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عليه رحمة الله الهادى फ़रमाते हैं : **इमामे आ'ज़म** عليه رحمة الله الاكرم अपने एक मक़रूज़ मजूसी (या'नी आतश परस्त) के यहां क़र्ज़ा वुसूल करने के लिये तशरीफ़ ले गए। इत्तिफ़ाक़ से उस के मकान के क़रीब आप رضى الله تعالى عنه की ना'ले पाक (या'नी जूती मुबारक) में कीचड़ लग गई, कीचड़ छुड़ाने के लिये ना'ले पाक को झाड़ा तो कुछ कीचड़ उड़ कर मजूसी की दीवार से लग गई, परेशान हो गए कि अब क्या करूं ! कीचड़ साफ़ करता हूं तो दीवार की मिट्टी भी उखड़ेगी और साफ़ नहीं करता तो दीवार ख़राब हो रही है। इसी शशो पन्ज में दरवाज़े पर दस्तक दी, **मजूसी** ने बाहर निकल कर जब इमामे आ'ज़म عليه رحمة الله الاكرم को देखा तो उस ने क़र्ज़ की अदाएगी के सिलसिले में टालम टोल शुरूअ़ कर दी। इमामे आ'ज़म عليه رحمة الله الاكرم ने क़र्ज़ का मुता-लबा करने के बजाए दीवार पर कीचड़ लग जाने की बात बता कर निहायत ही लजाजत (या'नी आ़जिज़ी) के साथ मुआ़फ़ी मांगते हुए इर्शाद फ़रमाया : मुझे येह बताइये कि आप की दीवार किस त़रह़ साफ़ करूं ? इमामे आ'ज़म عليه رحمة الله الاكرم की **हुक़ूक़ुल इबाद** के मुआ-मले में बे क़रारी और ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी देख कर **मजूसी** बेह़द मु-तअस्सिर

www.dawateislami.net

हुवा और कुछ इस त़रह़ बोला : ऐ मुसल्मानों के इमाम ! दीवार की कीचड़ तो बा'द में साफ़ होती रहेगी, पहले मेरे **दिल की कीचड़** साफ़ कर के मुझे मुसल्मान बना दीजिये। चुनान्चे वोह **मजूसी** इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم का तक़्वा देख कर ह़ल्क़ा बगोशे इस्लाम हो गया।

(تفسیر کبیر ج ۱ ص ۲۰۴ داراحیاء التراث العربی بیروت)

गुनह की दलदल में फंस गया हूं, गले गले तक मैं धंस गया हूं

निकालिये बहरे नूह़ो आदम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पोस्टर लगाने का मस्अला

www.dawateislami.net

इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **मह़ब्बत** का दम भरने वाले **इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने, हमारे इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم बन्दों के ह़ुक़ूक़ के मुआ़-मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से किस क़दर डरते थे ! इस **ह़िकायत** से उन लोगों को दर्स ह़ासिल करना चाहिये जो लोगों की दीवारों और सीढ़ियों के कोनों वग़ैरा को पीक (या'नी पान के रंगीन थूक) की पिचकारियों से बदनुमा कर देते हैं, इसी त़रह़ बिग़ैर इजाज़ते मालिक मकानों और दुकानों की दीवारों और दरवाज़ों नीज़ साइन बोर्ड्ज़ और गाड़ियों, बसों वग़ैरा के बाहर या अन्दर स्टीकर्ज़ और पोस्टर लगाने वाले, दीवारों पर मालिक की इजाज़त के बिग़ैर "चोंकिंग" करने वाले भी दर्स ह़ासिल करें कि इस त़रह़ करने से लोगों के ह़ुक़ूक़ पामाल होते हैं। बेशक **ह़ुक़ूक़ुल्लाह** ही अ़ज़ीम तर हैं मगर तौबा के

तअ़ल्लुक़ से **हुक़ूक़ुल इ़बाद** का मुआ़-मला **हुक़ूक़ुल्लाह** से सख़्त तर है, दुन्या में जिस किसी का ह़क़ ज़ाएअ़ किया हो अगर उस से मुआ़फ़ी तलाफ़ी की तरकीब दुन्या ही में न बनी होगी तो क़ियामत के रोज़ उस साह़िबे ह़क़ को नेकियां देनी पड़ेंगी और अगर इस त़रह़ भी ह़क़ अदा न हुवा तो उस के गुनाह अपने सर लेने होंगे। म-सलन जिस ने बिला उ़ज़्रे शर-ई किसी को झाड़ा होगा, घूर कर या किसी भी त़रह़ डराया होगा, दिल दुखाया होगा, किसी को मारा होगा, किसी के पैसे दबा लिये होंगे, पीक, पोस्टर या चॉकिंग वग़ैरा के ज़रीए़ किसी की दीवार ख़राब की होगी, किसी की दुकान या मकान के आगे जगह घैर कर उस के लिये नाह़क़ परेशानी का सामान किया होगा, किसी की इ़मारत से क़रीब ग़ैर वाजिबी त़ौर पर ज़बर दस्ती अपनी इ़मारत बना कर उस की हवा और रोशनी में रुकावट खड़ी की होगी, किसी की स्कूटर या कार वग़ैरा को अपनी गाड़ी से डेन्ट डाल कर या ख़राश लगा कर राहे फ़िरार इख़्तियार की होगी, या भाग न सकने की सूरत में अपना क़ुसूर होने के बा वुजूद अपनी चर्ब ज़बानी या रो'ब दाब से उसी को मुजरिम बावर करा कर उस की ह़क़ त-लफ़ी की होगी, ई़दे क़ुरबां वग़ैरा के मौक़अ़ पर साह़िबे मकान की रिज़ा मन्दी के बिग़ैर उस के घर के आगे जानवर बांध कर या ज़ब्ह़ कर के उस की दीवार या घर से निकलने का रस्ता गोबर, ख़ून और कीचड़ वग़ैरा से आलूद कर के उस के लिये ईज़ा का सामान किया होगा, किसी के मकान या दुकान के पास या उस की छत या प्लॉट पर परेशान कुन गन्द कचरा फेंका होगा, **अल ग़रज़** लोगों के हुक़ूक़ पामाल करने वाला अगर्चे नमाज़ें, ह़ज, उ़मरे, ख़ैरातें और बड़ी बड़ी नेकियां ले कर गया होगा, मगर बरोज़े क़ियामत उस की इ़बादतें वोह लोग ले जाएंगे

www.dawateislami.net

जिन को नाहक़ नुक़्सान पहुंचाया होगा या बिला इजाज़ते शर-ई किसी तरह़ से उन की दिल आज़ारी का बाइस बना होगा । नेकियां देने के बा वुजूद हुक़ूक़ बाक़ी रहने की सूरत में उन के गुनाह इस "नेक नमाज़ी" के सर थोप दिये जाएंगे और यूं दूसरों की ह़क़ त-लफ़ी करने के सबब ह़ाजी, नमाज़ी, रोज़ादार और तहज्जुद गुज़ार होने के बा वुजूद वोह जहन्नम में जा पड़ेगा । وَالْعِيَاذُ بِاللّٰہ تعالٰی (और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह) हां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के लिये चाहेगा मह़्ज़ अपने फ़ज़्लो करम से सुल्ह़ कराएगा । मज़ीद तफ़्सीलात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ रिसाला "**ज़ुल्म का अन्जाम**" मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये । **हुक़ूक़ुल इबाद** के मु-तअ़ल्लिक़ एक और इ़ब्रत अंगेज़ **हिकायत** पढ़िये और ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी से लरज़िये :

क़ियामत का ख़ौफ़ दिलाने पर बेहोश हो गए

सय्यिदुना मिस्अ़र बिन किदाम عليه رحمة الله السلام से रिवायत है : एक रोज़ हम इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم के साथ कहीं से गुज़र रहे थे कि बे ख़याली में इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم का मुबारक पाउं एक लड़के के **पैर** पर पड़ गया, लड़के की चीख़ निकल गई और उस के मुंह से बे साख़्ता निकला : يَا شَيْخُ اَلَا تَخَافُ الْقِصَاصَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ! "**या'नी जनाब ! क्या आप क़ियामत के रोज़ लिये जाने वाले इन्तिक़ामे ख़ुदा वन्दी से नहीं डरते ?**" येह सुनते ही इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم पर लरज़ा त़ारी हो गया और ग़श खा कर ज़मीन पर तशरीफ़ लाए, जब कुछ देर के बा'द होश में आए तो मैं ने अ़र्ज़ की, कि एक लड़के की बात से आप इस क़दर क्यूं घबरा गए ? फ़रमाया : "क्या

www.dawateislami.net

मा'लूम उस की आवाज़ ग़ैबी हिदायत हो ।" (اَلْمَنَاقِب لِلْمُوَفَّق ج ٢ ص١٤٨)

शहा अ़दू का सितम है पैहम, मदद को आओ इमामे आ'ज़म
सिवा तुम्हारे है कौन हमदम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दूसरों को ईज़ा देने वालो ख़बरदार !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता कि इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم जानबूझ कर किसी पर ज़ुल्म करें और उस का **पैर** कुचल दें, बे ख़याली में सरज़द होने वाले फ़े'ल पर भी आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ के सबब बेहोश हो गए और एक हम लोग हैं कि जानबूझ कर न जाने रोज़ाना कितनों को त़रह़ त़रह़ से ईज़ाएं देते होंगे, मगर अफ़्सोस ! हमें इस बात का एह़सास तक नहीं होता कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ियामत के रोज़ हम से इन्तिक़ाम लिया तो हमारा क्या बनेगा !

फ़ुज़ूल बातों से नफ़रत

एक बार ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद ने सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ से अ़र्ज़ की : ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہ के औसाफ़ (या'नी ख़ूबियां) बयान कीजिये । फ़रमाया : इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم निहायत ही परहेज़ गार थे, मम्नूआ़ते शर-ई से बचते थे, अहले दुन्या से परहेज़ फ़रमाते, **फ़ुज़ूल बातों से नफ़रत करते**, अक्सर ख़ामोश रह कर (दीन और आख़िरत के बारे में)

www.dawateislami.net

सोचते रहते, जब कोई मस्अला पूछता तो मा'लूम होने पर जवाब दे देते वरना ख़ामोश रहते, हर त़रह़ से अपने दीन व ईमान की ह़िफ़ाज़त फ़रमाते, हर एक (मुसल्मान) का ज़िक्र भलाई के साथ ही करते (या'नी किसी की ऐबचीनी और ग़ीबत न फ़रमाते), ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद ने येह सुन कर कहा : "सालिह़ीन (या'नी नेक बन्दों) के अख़्लाक़ ऐसे ही होते हैं।"

(अल ख़ैरातुल ह़िसान, स. 82)

इमामे आ'ज़म गुफ़्त-गू में पहल करने से बचते

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन दुकैन رحمة الله تعالى عليه कहते हैं : इमामे आ'ज़म عليه رحمة الله الاكرم निहायत बा रो'ब थे, (बात शुरूअ़ करने में पहल न फ़रमाते बल्कि) जब भी गुफ़्त-गू फ़रमाते तो किसी के जवाब ही के लिये फ़रमाते और बेकार बातें सुनते ही न थे नीज़ ऐसी बातों पर तवज्जोह न फ़रमाते। (اَلْخَيْرَاتُ الْحِسان ص ٥٥)

गुफ़्त-गू में पहल के नुक़्सानात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इमामे आ'ज़म عليه رحمة الله الاكرم के गुफ़्त-गू में पहल न करने की ह़िक्मत मरह़बा ! वाक़ेई अगर इस "**ह़िक्मत भरे म-दनी फूल**" को अपना लिया जाए तो बहुत सारे नुक़्सानात से बचत हो सकती है, क्यूं कि बारहा ऐसा होता है कि आदमी कोई ग़ैर ज़रूरी ख़बर देता या फ़ालतू गुफ़्त-गू छेड़ता है फिर अगर्चे ख़ुद ख़ामोश हो भी जाए मगर इस की छेड़ी हुई बात पर तब्सरा बराबर जारी रहता है ह़त्ता कि गुफ़्त-गू का येह फ़ुज़ूल दर फ़ुज़ूल सिलसिला चलते चलते बसा अवक़ात गुनाहों की वादियों में उतर जाता है ! न इन्सान बात का आग़ाज़

www.dawateislami.net

करे न इतने बखेड़े हों ।

फ़ुज़ूल गोई की निकले आ़दत, हो दूर बे जा हंसी की ख़स्लत

दुरूद पढ़ता रहूं मैं हर दम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी इन्आ़मात किस के लिये कितने ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ए कार पर मुश्तमिल शरीअ़त व त़रीक़त का जामेअ़ मज्मूआ़ बनाम "**म-दनी इन्आ़मात**" ब सूरते सुवालात मुरत्तब किया गया है । इस्लामी भाइयों के लिये **72**, इस्लामी बहनों के लिये **63**, त़-ल-बए इ़ल्मे दीन के लिये **92**, दीनी त़ालिबात के लिये **83**, म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों के लिये **40** जब कि खुसूसी इस्लामी भाइयों (या'नी गूंगे बहरों) के लिये **27 म-दनी इन्आ़मात** हैं । बे शुमार इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और त़-लबा **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना सोने से क़ब्ल "**फ़िक्रे मदीना करते हुए**" या'नी अपने आ'माल का जाएज़ा ले कर **म-दनी इन्आ़मात** के जेबी साइज़ रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर करते हैं । इन म-दनी इन्आ़मात को इख़्लास के साथ अपना लेने के बा'द नेक बनने और गुनाहों से बचने की राह में ह़ाइल रुकावटें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से अक्सर दूर हो जाती हैं और इस की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का

ज़ेह्न भी बनता है। सभी को चाहिये कि बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला ह़ासिल करें और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** (या'नी अपना मुह़ा-सबा) करते हुए इस में दिये गए ख़ाने पुर करें और हिजरी सिन के मुत़ाबिक़ हर म-दनी या'नी क़-मरी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के **म-दनी इन्आ़मात** के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बनाएं।

तू वली अपना बना ले उस को रब्बे लम यज़ल

म-दनी इन्आ़मात पर करता रहे जो भी अ़मल

www.dawateislami.net

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आ़मिलीने म-दनी इन्आ़मात के लिये बिशारते उ़ज़्मा

म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करने वाले किस क़दर ख़ुश क़िस्मत होते हैं इस का अन्दाज़ा इस **म-दनी बहार** से लगाइये चुनान्चे ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ ह़लफ़िया (या'नी क़समिया) बयान है कि माहे र-जबुल मुरज्जब 1426 हि. की एक शब मुझे ख़्वाब में **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की अ़ज़ीम सआ़दत मिली। लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, और मीठे बोल के अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **जो इस माह रोज़ाना पाबन्दी**

से म-दनी इन्आमात से मु-तअ़ल्लिक़ फ़िक्रे मदीना करेगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा ।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلی اللہ تعالیٰ علیٰ محمد

दुश्मन के लिये दुआ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم के साथ कोई कितनी ही बुराई करता, आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ उस की ख़ैर ख़्वाही ही फ़रमाते । चुनान्चे एक बार किसी ह़ासिद ने इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم को सख़्त बुरा भला कहा, गन्दी गालियां भी दीं और गुमराह बल्कि مَعَاذَاللہ ज़िन्दीक़ (या'नी बे दीन) तक कह दिया । इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم ने जवाब में इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को मुआ़फ़ फ़रमाए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जानता है कि आप जो कुछ मेरे बारे में कह रहे हैं मैं ऐसा नहीं हूं ।" इतना फ़रमाने के बा'द आप का दिल भर आया और आंखों से आंसू जारी हो गए और फ़रमाने लगे : "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उम्मीद करता हूं कि वोह मुझे मुआ़फ़ी अ़ता फ़रमाएगा, आह ! मुझे अ़ज़ाब का ख़ौफ़ रुलाता है ।" अ़ज़ाब का तसव्वुर आते ही गिर्या (या'नी रोना) बढ़ गया और रोते रोते बेहोश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए । जब होश आया तो दुआ़ मांगी : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जिस ने मेरी बुराई बयान की उस को मुआ़फ़ फ़रमा दे ।" वोह शख़्स आप के येह **अख़्लाक़े करीमा** देख कर बहुत मु-तअस्सिर हुवा और मुआ़फ़ी मांगने लगा, फ़रमाया : जिस ने ला इल्मी के सबब मेरे बारे में कुछ कहा उस को मुआ़फ़ है, हां जो अहले इल्म होने के बा वुजूद जान बूझ कर मेरी त़रफ़ ग़लत़ ऐब मन्सूब करता है वोह क़ुसूर वार

है। क्यूं कि **उ़-लमा की ग़ीबत** करना उन के बा'द भी बाक़ी रहता है।

(अल ख़ैरातुल ह़िसान, स. 55)

न जीते जी आए कोई आफ़त, मैं क़ब्र में भी रहूं सलामत
बरोज़े मह़शर भी रखना बे ग़म, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

त़मांचा मारने वाले को अनोखा इन्आ़म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने मुख़ालिफ़ पर इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم के फ़ज़्लो करम का एक और अछूता वाक़िआ़ सुनिये और झूमिये और अपने ज़ाती दुश्मनों पर लाख गुस्सा आए दर गुज़र की आ़दत डाल कर अ़-मली तौर पर इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की **मह़ब्बत** का सुबूत फ़राहम कीजिये। चुनान्चे एक बार किसी ह़ासिद ने करोड़ों मुसल्मानों के बेताज बादशाह और इमाम व पेशवा सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم को مَعَاذَ اللّٰہ **ज़ोरदार त़मांचा** रसीद कर दिया, इस पर **सब्रो तह़म्मुल के पैकर इमामे आ'ज़म** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने इन्तिहाई आ़जिज़ी के साथ फ़रमाया : "भाईजान ! मैं भी आप को त़मांचा मार सकता हूं मगर नहीं मारूंगा, अ़दालत में आप के ख़िलाफ़ दा'वा दाइर कर सकता हूं मगर नहीं करूंगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे बेकस पनाह में आप के ज़ुल्म की फ़रियाद कर सकता हूं लेकिन नहीं करता और बरोज़े क़ियामत इस ज़ुल्म का बदला ह़ासिल कर सकता हूं मगर येह भी नहीं करूंगा, अगर बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर ख़ुसूसी करम फ़रमाया और मेरी सिफ़ारिश आप के ह़क़ में क़बूल कर ली तो मैं आप के बिग़ैर जन्नत में क़दम न रखूंगा।"

www.dawateislami.net

हुई शहा फ़र्दे जुर्म आ़इद, बचा फंसा वरना अब मुक़ल्लिद
फ़िरिश्ते ले के चले जहन्नम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुआ़फ़ करने वाले बरोज़े क़ियामत बे ह़िसाब दाख़िले जन्नत होंगे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई हमारे इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم **सब्र** के पहाड़ थे और वोह **सब्र** के फ़ज़ाइल से आगाह थे। काश ! हम भी अपने ऊपर ज़ुल्म करने वालों पर ग़ुस्से से बे क़ाबू हो कर लड़ाई भिड़ाई पर उतर आने के बजाए उन को मुआ़फ़ कर के सवाब का ख़ज़ाना लूटना सीख लें। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 505 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"ग़ीबत की तबाह कारियां"** सफ़ह़ा 479 और 481 पर दिये हुए **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़िये और झूमिये : ﴾1﴿ जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) मह़ल बनाया जाए और उस के द-रजात बुलन्द किये जाएं, उसे चाहिये कि जो इस पर ज़ुल्म करे येह उसे मुआ़फ़ करे और जो इसे मह़रूम करे येह उसे अ़त़ा करे और जो इस से क़त़्ए तअ़ल्लुक़ करे (या'नी तअ़ल्लुक़ात तोड़े) येह उस से नात़ा (या'नी रिश्ता) जोड़े। (اَلْمُسْتَدْرَك لِلْحاكِم ج٣ ص١٢ حديث ٣٢١٥ دارالمعرفة بيروت) ﴾2﴿ क़ियामत के रोज़ ए'लान किया जाएगा : जिस का अज्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है, वोह उठे और **जन्नत** में दाख़िल हो जाए। पूछा जाएगा : किस के लिये अज्र है ? वोह मुनादी (या'नी ए'लान करने वाला)

www.dawateislami.net

कहेगा : **"उन लोगों के लिये जो मुआ़फ़ करने वाले हैं ।"** तो हज़ारों आदमी खड़े होंगे और **बिला ह़िसाब जन्नत** में दाख़िल हो जाएंगे। **(اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط ج۱ص۵۴۲حدیث۱۹۹۸)**

इस उ़न्वान पर **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ रिसाला "अ़फ़्वो दर गुज़र के फ़ज़ाइल" पढ़ने से तअ़ल्लुक़ रखता है, येह रिसाला फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द 2 के बाब "ग़ीबत की तबाह कारियां" सफ़ह़ा 478 ता 493 पर भी मौजूद है। **दा'वते इस्लामी** की वेब साइट www.dawteislami.net पर भी पढ़ और "प्रिन्ट आउट" कर सकते हैं।

अहले ज़माना में सब से ज़ाइद अ़क़्ल मन्द

हमारे इमामे आ'ज़म के पास इ़ल्मे दीन का ज़बर दस्त ज़ख़ीरा था और आप رضی اللہ تعالٰی عنہ बहुत ज़ियादा अ़क़्ल मन्द थे। **"अल ख़ैरातुल ह़िसान"** में है, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे शाफ़ेई رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : "इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ से ज़ाइद अ़क़्ल मन्द किसी औ़रत ने नहीं जना।" सय्यिदुना बक्र बिन जैश رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : "अगर इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ और इन के अहले ज़माना की अ़क़्लों को जम्अ़ किया जाए, तो इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ की अ़क़्ल सब पर ग़ालिब आ जाए।" (अल ख़ैरातुल ह़िसान, स. 62) आप की अ़क़्ले सलीम और बे मिसाल अन्दाज़े तफ़्हीम (या'नी समझाने के बे नज़ीर त़रीक़े) की एक ईमान अफ़रोज़ **ह़िकायत** सुनिये और झूमिये :

उ़स्माने ग़नी के गुस्ताख़ पर इन्फ़िरादी कोशिश

कूफ़ा में एक शख़्स **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी जुन्नूरैन जामिउ़ल क़ुरआन رضی اللہ تعالٰی عنہ की शाने शराफ़त निशान में बकवास करता और مَعَاذَ اللہ عزّوجلّ आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को

यहूदी कहता था। एक बार सय्यिदुना **इमामे आ'ज़म** رضی اللہ تعالٰی عنہ उस के पास तशरीफ़ ले गए और उस पर इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए ह़िक्मत भरे म-दनी फूल लुटाते हुए फ़रमाया : मैं आप की बेटी के लिये रिश्ता लाया हूं, लड़का ऐसा है कि बस उस पर हर वक़्त ख़ौफ़े ख़ुदा عزّوجلّ का ग़-लबा रहता है। निहायत **मुत्तक़ी** और परहेज़ गार है और सारी सारी रात इबादत में गुज़ार देता है। लड़के के येह औसाफ़ (या'नी ख़ूबियां) सुन कर वोह शख़्स बोला : बहुत ख़ूब ! ऐसा दामाद तो हमारे सारे ख़ानदान के लिये बाइसे सआ़दत होगा ! **इमामे आ'ज़म** علیہ رحمۃ اللہ الاکرم ने फ़रमाया : मगर उस में एक ऐ़ब है और वोह येह कि वोह मज़्हबन यहूदी है। येह सुनते ही वोह शख़्स सीख़ पा हो गया और गरज कर बोला : क्या मैं अपनी बेटी की शादी यहूदी से करूं ? सय्यिदुना इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم ने निहायत ही नर्मी से इर्शाद फ़रमाया : "भाई ! आप ख़ुद तो अपनी बेटी यहूदी के निकाह़ में देने के लिये तय्यार नहीं तो येह कैसे हो सकता है कि **अल्लाह** عزّوجلّ के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब** صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم यके बा'द दीगरे अपनी **दो शहज़ादियां** किसी यहूदी के निकाह़ में दे दें !" येह सुन कर उस की अ़क़्ल ठिकाने लग गई और वोह बेह़द नादिम हुवा और सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन जामिउ़ल क़ुरआन رضی اللہ تعالٰی عنہ की मुख़ा-लफ़्त से तौबा की। **(اَلْمَناقِب لِلْکَرْدَری ج۱ ص۱۶۱ کوئٹہ)**

नूर की सरकार से पाया दोशाला नूर का
हो मुबारक तुम को ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जान दे दी मगर हुकूमती ओ़हदा क़बूल न किया

अ़ब्बासी ख़लीफ़ा मन्सूर ने इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم से अ़र्ज़ की, कि आप मेरी मम्लकत के **क़ाज़ियुल कुज़ात** (या'नी चीफ़ जज) बन जाइये । फ़रमाया : मैं इस ओ़हदे के क़ाबिल नहीं । **मन्सूर** बोला : आप झूट कहते हैं : **फ़रमाया :** अगर मैं झूट बोलता हूं तो आप ने खुद ही फ़ैसला कर दिया ! झूटा शख़्स क़ाज़ी बनने के लाइक़ ही नहीं होता । ख़लीफ़ा **मन्सूर** ने इस बात को अपनी तौहीन तसव्वुर करते हुए आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को जेल भिजवा दिया । रोज़ाना आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के सरे मुबारक पर **दस कोड़े** मारे जाते जिस से ख़ून सरे अक़्दस से बह कर टख़्नों तक आ जाता, इस त़रह मजबूर किया जाता रहा कि क़ाज़ी बनने के लिये हामी भर लें, मगर आप رضی اللہ تعالٰی عنہ हुकूमती ओ़हदा क़बूल करने के लिये राज़ी न हुए । इसी त़रह आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को यौमिय्या दस के हिसाब से एक सो दस110 कोड़े मारे गए । लोगों की हमदर्दियां इमामे आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم के साथ थीं । बिल आख़िर धोके से **ज़ह्‌र का पियाला** पेश किया गया, मगर आप علیہ رحمۃ اللہ الاکرم मोमिनाना फ़िरासत से **ज़ह्‌र** को पहचान गए और पीने से इन्कार फ़रमा दिया, इस पर आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को लिटा कर ज़बर दस्ती ह़ल्क़ में **ज़ह्‌र** उंडेल दिया गया, **ज़ह्‌र** ने जब अपना असर दिखाना शुरूअ़ किया तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ बारगाहे खुदा वन्दी में सज्दा रेज़ हो गए और सज्दे ही की ह़ालत में सि. 150 हि. में आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जामे शहादत नोश किया । (अल ख़ैरातुल ह़िसान, स. 88, 92) उस वक़्त आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की उ़म्र शरीफ़

www.dawateislami.net

80 बरस थी। बग़दादे मुअ़ल्ला में आप رضی اللہ تعالٰی عنہ का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार आज भी मर-जए ख़लाइक़ है।

फिर आक़ा बग़दाद में बुला कर, वोह रौज़ा दिखलाइये जहां पर
हैं नूर की बारिशें छमाछम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मज़ारे इमामे आ'ज़म की ब-र-कतें

मुफ़्तिये ह़िजाज़ शैख़ शहाबुद्दीन अह़मद बिन **ह़जर हैतमी मक्की शाफ़ेई** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपनी मशहूर किताब **"अल ख़ैरातुल ह़िसान फ़ी मनाक़िबिन्नो'मान"** के बाब नम्बर 35 जिस के उ़न्वान में येह भी है, "आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की **क़ब्र** शरीफ़ की ज़ियारत ह़ाजतें पूरी होने के लिये मुफ़ीद है" में फ़रमाते हैं : जानना चाहिये कि उ़-लमा और दीगर ह़ाजत मन्द ह़ज़रात आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के मज़ार शरीफ़ की मुसल्सल ज़ियारत करते रहते हैं और आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के पास आ कर अपनी ह़वाइज (या'नी ह़ाजतों) के लिये आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को वसीला बनाते हैं और उस में काम्याबी पाते हैं, उन में से (ह़ज़रते सय्यिदुना) **इमाम शाफ़ेई** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی भी हैं, जब आप رضی اللہ تعالٰی عنہ बग़दाद में थे तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के मु-तअ़ल्लिक़ मरवी है कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि मैं (ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम) अबू ह़नीफ़ा (رضی اللہ تعالٰی عنہ) से **तबर्रुक** ह़ासिल करता हूं, और जब कोई ह़ाजत पेश आती है तो दो[2] रक्अ़त पढ़ कर उन की **क़ब्रे अन्वर** के पास आता हूं और उस के पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

से दुआ़ करता हूं तो वोह ह़ाजत जल्द पूरी हो जाती है।

(अल ख़ैरातुल ह़िसान, स. 94)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

जिगर भी ज़ख़्मी है दिल भी घाइल, हज़ार फ़िक्रें हैं सो मसाइल
दुखों का अ़त़्त़ार को दो मरहम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

फ़ैज़ाने म-दनी चेनल जारी रहेगा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी मर्कज़ की त़रफ़ से इनायत फ़रमूदा **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल करते हुए रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** (या'नी अपने एह़तिसाब) के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाइये। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक अ़ज़ीमुश्शान **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार की जाती है चुनान्चे **मीरपूर नम्बर 11** (ढाका, बंगलादेश) के एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के "म-दनी माह़ोल" के तह़त होने वाले **म-दनी तरबिय्यती कोर्स** के लिये "इन्फ़िरादी कोशिश" करने के लिये एक अ़लाक़े में गया। एक इस्लामी भाई को जूंही मैं ने म-दनी तरबिय्यती कोर्स की दा'वत पेश की तो वोह बोल उठा : मेरे चेहरे पर प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم की

www.dawateislami.net

मह़ब्बत की निशानी या'नी **दाढ़ी शरीफ़** जो आप देख रहे हैं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह दा'वते इस्लामी के "**म-दनी चेनल**" का फ़ैज़ान है, म-दनी चेनल पर एक रिक़्क़त अंगेज़ सुन्नतों भरा बयान सुन कर **नमाज़ का पाबन्द** बना, **दाढ़ी सजाई** और मैं ने **क़ुरआने पाक की ता'लीम** ह़ासिल करना शुरूअ़ कर दी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ

म-दनी चेनल सुन्नतों की लाएगा घर घर बहार

म-दनी चेनल से हमें क्यूं वालिहाना हो न प्यार

(वसाइले बख़्शिश, स. 338)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी चेनल के ज़रीए ज़रूरी उ़लूम ह़ासिल कीजिये

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ الله ! दा'वते इस्लामी के "म-दनी चेनल" ने दुन्या के कई ममालिक में सुन्नतों की धूम मचा रखी है, म-दनी चेनल के ज़रीए नेकियां बढ़ाने और जन्नत दिलाने, गुनाह मिटाने और जहन्नम से बचाने वाले ज़रूरी उ़लूम सीखने को मिलते हैं। ज़रूरी उ़लूम के ह़ुसूल की तरग़ीब देते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन इब्राहीम ज़रनूजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : اَفْضَلُ الْعِلْمِ عِلْمُ الْحَالِ وَ اَفْضَلُ الْعَمَلِ حِفْظُ الْحَالِ या'नी "अफ़्ज़ल तरीन इ़ल्म वोह होता है कि जो उमूर उस वक़्त दरपेश हों उन से आगाही ह़ासिल की जाए और अफ़्ज़ल तरीन अ़मल अपने अह़वाल (या'नी कैफ़िय्यात व ह़ाल व चाल) की ह़िफ़ाज़त करना है।" पस एक मुसल्मान पर उन उ़लूम का जानना बहुत ज़रूरी है जिन की ज़रूरत उस को अपनी ज़िन्दगी में पड़ती

है, ख़्वाह वोह किसी भी शो'बे से तअ़ल्लुक़ रखता हो। (राहे इल्म, स. 77) घर बैठे सुन्नतें और रोज़ मर्रा की ज़रूरत का इल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये आप भी **म-दनी चेनल** देखिये और दूसरों को भी इस की तरग़ीब फ़रमाइये।

म-दनी चेनल में नबी की सुन्नतों की धूम है
इस लिये शैत़ां लई़ रन्जूर है मग़मूम है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।" (مِشْكَاةُ الْمَصَابِيح ج١ ص٥٥ حديث ١٧٥)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"शाने इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा" के उन्नीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से तेल डालने और कंघी करने के 19 म-दनी फूल

﴾1﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

सरे अक़्दस में अक्सर तेल लगाते और दाढ़ी मुबारक में कंघी करते थे और अक्सर सरे मुबारक पर कपड़ा रखते थे यहां तक कि वोह कपड़ा तेल से तर रहता था (اَلشَّمَائِلُ الْمُحَمَّدِيَّة لِلتِّرمِذی ص٤٠) मा'लूम हुवा "सरबन्द" का इस्ति'माल सुन्नत है, इस्लामी भाइयों को चाहिये कि जब भी सर में तेल डालें, एक छोटा सा कपड़ा सर पर बांध लिया करें, इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ टोपी और इमामा शरीफ़ तेल की आलू-दगी से काफ़ी ह़द तक मह़फ़ूज़ रहेंगे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ का बरसहा बरस से "सरबन्द" इस्ति'माल करने का मा'मूल है ﴾2﴿ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم "जिस के बाल हों वोह उन का **एह़तिराम** करे" (सु-नने अबू दावूद, जि. 4, स. 103, ह़दीस : 4163) या'नी उन्हें धोए, तेल लगाए और कंघी करे (اَشعةُ اللّمعات ج٣ ص ٦١٧) ﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना **नाफ़ेअ़** رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत है : **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا दिन में दो मर्तबा तेल लगाते थे (मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा, जि. 6, स. 117) बालों में तेल का ब कसरत इस्ति'माल खुसूसन अहले इ़ल्म ह़ज़रात के लिये मुफ़ीद है कि इस से सर में खुश्की नहीं होती, दिमाग़ तर और ह़ाफ़िज़ा क़वी होता है ﴾4﴿ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم : "जब तुम में से कोई तेल लगाए तो भंवों (या'नी अब्रूओं) से शुरूअ़ करे, इस से **सर का दर्द दूर** होता है" (اَلْجَامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوطی ص٢٨ حدیث ٣٦٩) ﴾5﴿ "**कन्ज़ुल उ़म्माल**" में है : प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم जब तेल इस्ति'माल फ़रमाते तो पहले अपनी उलटी हथेली पर तेल डाल लेते थे, फिर पहले दोनों अब्रूओं पर फिर

www.dawateislami.net

दोनों आंखों पर और फिर सरे मुबारक पर लगाते थे (कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 7, स. 46, रक़्म : 18295) ❀6❀ **"त़-बरानी"** की रिवायत में है : **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब दाढ़ी मुबारक को तेल लगाते तो **"अ़न्फ़क़ह"** (या'नी निचले होंट और ठोड़ी के दरमियानी बालों) से इब्तिदा फ़रमाते थे **(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرانی ج٥ص٣٦٦حديث ٧٦٢٩)**

❀7❀ दाढ़ी में कंघी करना सुन्नत है **(اَشعةُ اللّمعات ج٣ ص٦١٦)**

❀8❀ बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** पढ़े तेल लगाना और बालों को ख़ुश्क और परा गन्दा (या'नी बिखरे हुए) रखना ख़िलाफ़े सुन्नत है ❀9❀ ह़दीसे पाक में है : जो बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** पढ़े तेल लगाए तो 70 शयात़ीन उस के साथ शरीक हो जाते हैं **(عَمَلُ الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ لابن السنی ج١ص٣٢٧ حديث ١٧٣)**

www.dawateislami.net

❀10❀ **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی नक़्ल करते हैं, **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : एक मर्तबा मोमिन के शैत़ान और काफ़िर के शैत़ान में मुलाक़ात हुई, काफ़िर का शैत़ान ख़ूब **मोटा ताज़ा** और अच्छे लिबास में था । जब कि मोमिन का शैत़ान **दुबला पतला**, परा गन्दा (या'नी बिखरे हुए) बालों वाला और बरह्ना (या'नी नंगा) था । काफ़िर के शैत़ान ने मोमिन के शैत़ान से पूछा : आख़िर तुम इतने कमज़ोर क्यूं हो ? उस ने जवाब दिया : मैं एक ऐसे शख़्स के साथ हूं जो खाते पीते वक़्त **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ पढ़ लेता है तो मैं भूका व प्यासा रह जाता हूं, जब तेल लगाता है तो **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ पढ़ लेता है तो मेरे बाल परा गन्दा (या'नी बिखरे हुए) रह जाते हैं । इस पर काफ़िर के शैत़ान ने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (कन्ज़ुल उ़म्माल)

कहा : मैं तो ऐसे के साथ हूं जो इन कामों में कुछ भी नहीं करता लिहाज़ा मैं उस के साथ खाने पीने, लिबास और तेल लगाने में शरीक हो जाता हूं (एह्याउल उ़लूम, जि. 3, स. 45) ﴾11﴿ **तेल डालने से क़ब्ल** "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" पढ़ कर तेल की शीशी वग़ैरा में से उलटे हाथ के हथेली में थोड़ा सा तेल डालिये, फिर पहले सीधी आंख के अब्रू पर तेल लगाइये फिर उलटी के, इस के बा'द सीधी आंख की पलक पर, फिर उलटी पर, अब सर में तेल डालिये। और दाढ़ी को तेल लगाएं तो निचले होंट और ठोड़ी के दरमियानी बालों से आग़ाज़ कीजिये ﴾12﴿ सरसों का तेल डालने वाला टोपी या इमामा उतारता है तो बा'ज़ अवक़ात बदबू का भपका निकलता है लिहाज़ा जिस से बन पड़े वोह सर में उ़म्दा खुश्बूदार तेल डाले, खुश्बूदार तेल बनाने का एक आसान त़रीक़ा येह भी है कि खोपरे के तेल की शीशी में अपने पसन्दीदा इत्र के चन्द क़त़रे डाल कर ह़ल कर लीजिये, खुश्बूदार तेल तय्यार है। सर और दाढ़ी के बालों को वक़्तन फ़ वक़्तन साबून से धोते रहिये ﴾13﴿ औ़रतों को लाज़िम है कि कंघी करने में या सर धोने में जो बाल निकलें उन्हें कहीं छुपा दें कि उन पर अजनबी (या'नी ऐसा शख़्स जिस से हमेशा के लिये निकाह़ ह़राम न हो) की नज़र न पड़े (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 92) ﴾14﴿ **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रोज़ाना कंघी करने से मन्अ़ फ़रमाया। (तिरमिज़ी, जि. 3, स. 293, ह़दीस : 1762) येह नह्य (या'नी मुमा-न-अ़त मक्रूहे) तन्ज़ीही है और मक़्सद येह है कि मर्द को बनाव सिंघार में मश्ग़ूल न रहना चाहिये (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 235) इमाम मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जिस शख़्स

www.dawateislami.net

को बालों की कसरत की वजह से ज़रूरत हो वोह मुत्लक़न रोज़ाना कंघी कर सकता है (फ़ैज़ुल क़दीर, जि. 6, स. 404) ❮15❯ बारगाहे र-ज़विय्यत में होने वाले सुवाल व जवाब मुला-हज़ा हों, **सुवाल :** कंघा दाढ़ी में किस किस वक़्त किया जाए ? **जवाब :** कंघे के लिये शरीअ़त में कोई ख़ास वक़्त मुक़र्रर नहीं है ए'तिदाल (या'नी मियाना रवी) का हुक्म है, न तो येह हो कि आदमी जिन्नाती शक्ल बना रहे न येह हो कि हर वक़्त मांग चोटी में गरिफ़्तार (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 29, स. 92, 94) ❮16❯ कंघी करते वक़्त सीधी त़रफ़ से इब्तिदा कीजिये चुनान्चे **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالی عنہا फ़रमाती हैं : सरकारे रिसालत صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم हर काम में दाईं (या'नी सीधी) जानिब से शुरूअ़ करना पसन्द फ़रमाते यहां तक कि जूता पहनने, कंघी करने और त़हारत करने में भी (बुख़ारी, जि. 1, स. 81, ह़दीस : 168) शारेहे बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी ह़-नफ़ी علیہ رحمۃ اللہ القوی इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : येह तीन चीज़ें बत़ौरे मिसाल इर्शाद फ़रमाई गईं वरना हर काम जो इ़ज़्ज़त और बुज़ुर्गी रखता है उसे सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ करना मुस्तह़ब है जैसे मस्जिद में दाख़िल होना, लिबास पहनना, मिस्वाक करना, सुरमा लगाना, नाखुन तराशना, मूंछें काटना, बग़लों के बाल उतारना, वुज़ू, ग़ुस्ल करना और बैतुल ख़ला से बाहर आना वग़ैरा और जिस काम में येह बात नहीं जैसे मस्जिद से बाहर आने, बैतुल ख़ला में दाख़िल होने, नाक साफ़ करने, नीज़ शलवार और कपड़े उतारते वक़्त बाईं (या'नी उलटी त़रफ़) से इब्तिदा करना मुस्तह़ब है (उ़म्दतुल क़ारी, जि. 2, स. 476) ❮17❯ नमाज़े जुमुआ़ के लिये तेल और ख़ुश्बू लगाना मुस्तह़ब है (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 774, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची) ❮18❯ रोज़े की ह़ालत में दाढ़ी मूंछ में तेल लगाना मक्रूह नहीं

www.dawateislami.net

मगर इस लिये तेल लगाया कि दाढ़ी बढ़ जाए, ह़ालां कि एक मुश्त (या'नी एक मुठ्ठी) दाढ़ी है तो येह बिग़ैर रोज़े के भी मक्रूह है और रोज़े में ब द-र-जए औला (ऐज़न, स. 997) ﴾19﴿ मय्यित की दाढ़ी या सर के बाल में कंघी करना, ना जाइज़ व गुनाह है। (دُرِّمُختار ج۳ص۱۰٤ دارالمعرفة بیروت)

तेल की बूंदें टपकती नहीं बालों से रज़ा
सुब्ह़े आ़रिज़ पे लुटाते हैं सितारे गेसू (ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

www.dawateislami.net

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلی اللہ تعالیٰ علی محمد

येह बयान (*अश्कों की बरसात*)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ का है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस बयान को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मज्लिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मज्लिसे तराजिम (**दा'वते इस्लामी**), **मक-त-बतुल मदीना**
अह़मद आबाद
MO. 9374031409
E mail : translaionmaktabhind@dawateislami.net

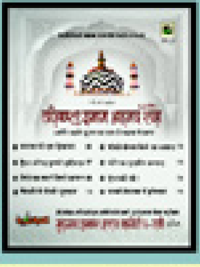 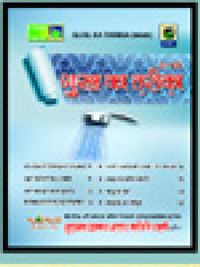

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्प्लेक्स, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, श्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net